Topic 42

अदन्त सर्वनाम ।

सर्वादीनि सर्वनामानि ।

सर्व, विश्व, उभ, उभय, डतर, डतम, अन्य, अन्यतर, इतर, त्वत् , त्व, नेम, सम, सिम ।

'सर्वस्य नामेति सर्वनाम' तात्पर्य यह है कि इस गण में पढ़े हुए शब्द यदि 'सभी' के अर्थ में प्रयुक्त हों, तो सर्वनाम संज्ञक होंगे, अन्यथा नहीं। 'सर्व' शब्द किसी व्यक्ति-विशेष का वाचक होगा, तो उसकी सर्वनाम संज्ञा नहीं होगी। 'सर्वमतिक्रान्तः' इस विग्रह से बने हुए 'अतिसर्व' आदि शब्द भी सर्वनाम-संज्ञक नहीं हैं, क्योंकि 'सर्व' शब्द यहाँ गौण है। 'संज्ञोपसर्जनीभूतास्तु न सर्वादयः' अर्थात् संज्ञार्थक या गौणार्थक सर्वादि शब्द सर्वनाम-संज्ञक नहीं होते हैं।

गण सूत्र 1- पूर्वपराऽवर दक्षिणोत्तराऽपराऽधराणि व्यवस्थायाम संज्ञायाम् ।

~~स्वाभिधेयापेक्षा~~

'स्वाभिधेयापेक्षावधिनियमो व्यवस्था' अर्थात् जहाँ 'यह किससे पूर्व है? किससे पर है?' इत्यादि अवधि के नियम की आकांक्षा हो, वहाँ पर प्रयुक्त पूर्वादि शब्दों की सर्वनाम संज्ञा होती है। उदाहरण के लिए 'दक्षिणा गाथकाः' में दक्षिण शब्द चतुरवाचक है और अवधि की आकांक्षा नहीं होती, अतः इसकी सर्वनाम संज्ञा नहीं होगी।

गण सूत्र-2 (स्वमज्ञाति) स्वमज्ञातिधनाख्यायाम् ।

'स्व' शब्द के चार अर्थ हैं - आत्मा, आत्मीय (अपना) ज्ञाति (बान्धव) और धन। इनमें से पहले दो अर्थात् आत्मा और आत्मीय अर्थों में 'स्व' की सर्वनाम संज्ञा होगी, अन्य अर्थों में नहीं।

गण सूत्र - 3 अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः ।

बहिर्योग (बाहर का) और उपसंव्यान (अधीनस्थ) अर्थ में 'अन्तर' शब्द सर्वनाम-संज्ञक होता है।

त्वद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु, किम्